

## फसल संग्रहालय

फसल संग्रहालय नवीन कृषि तकनीकियों के हस्तान्तरण एवं मूल्यांकन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह किसानों, ग्रामीण युवाओं, छात्रों और प्रसार कार्यकर्ताओं तक तकनीकी जानकारी का प्रसार करने के साथ भदेखना ही विश्वास है और वैज्ञानिकों के साथ भआमने-सामन विचार के सिद्धांत पर आधारित व्यावहारिक अनुभव प्रदान करता है। सत्र 2020-21 रबी मौसम में गेहूँ के 17, जौ की 1, चना के 10, अलसी के 6 तथा मसूर के 7 प्रभेदों सत्र खरीफ 2021 में धान के 21 प्रभेदों, सत्र रबी 2021-22 में गेहूँ के 22, चना के 10, मसूर के 13 तथा अलसी के 7 प्रभेदों सत्र खरीफ 2022 धान के 52 प्रभेदों, सत्र रबी 2022-23 में गेहूँ के 23 चना के 10, सरसों के 3, अलसी की 7, मसूर के 13 प्रभेदों तथा शरदकालीन सत्र 2022 में गन्ना के 20 प्रभेदों का प्रदर्शन एवं मूल्यांकन किया गया। वर्ष 2020-21 से 2022-23 तक 4282 किसानों ने फसल संग्रहालय का भ्रमण कर ज्ञानार्जन अर्जित किया है।

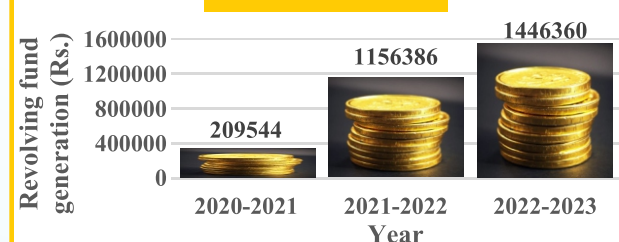


## सूचना एवं संचार तकनीक (आई.सी.टी.)

नवीनतक कृषि तकनीकियों का सूचना एवं संचार माध्यम द्वारा किसानों के ज्ञानार्जन हेतु समय-समय पर प्रसारित किया जा रहा है।



## रिवॉल्विंग फंड



## पुरस्कार एवं सम्मान



## प्रकाशन

शोध पत्र-33, पुस्तक-7, लोकप्रिय लेख-63, पुस्तक अध्याय प्रकाशित-10, फोल्डर-4, पैम्फलेट्स-98, सेमिनार / सिम्पोजिया / कान्फ्रेंस / कार्यशाला में प्रकाशित शोध पत्र-28

## पुरस्कार एवं सम्मान



## मुख्य संरक्षक

डॉ० पी. एस. पाण्डेय

माननीय कुलपति

डॉ.रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर, बिहार

## संरक्षक

डॉ० अनुपमा कुमारी

उप-निदेशक, प्रसार शिक्षा निदेशालय

संपादकगण

मुख्य संपादक

डॉ० भूषण कुमार सिंह

डॉ० पंकज मेलकानी

डॉ० अभीक पात्र

डॉ० गगन कुमार

## संरक्षक

डॉ० एम.एस. कुण्डू

निदेशक, प्रसार शिक्षा

डॉ.रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर, बिहार

## मुख्य संपादक

डॉ० आर. पी. सिंह

वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

कृषि विज्ञान केन्द्र, नरकटियागंज

# डॉ० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार

## कृषि विज्ञान केन्द्र, नरकटियागंज पश्चिम चम्पारण, बिहार

E-mail : head.kvk.narkatiaganj@rpcac.ac.in

Website : www.rpcac.ac.in

Design by : Kamdeo Kumar Pal

प्रकाशन नं.- WN/KVK/F/404/2023



# डॉ० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

पूसा, बिहार-848 125

# कृषि विज्ञान केन्द्र

नरकटियागंज पश्चिम चम्पारण, बिहार

एक नज़र...



## KVK NARKATIYAGANJ, MAP

कृषि विज्ञान केन्द्र, नरकटियागंज (नक्सा)

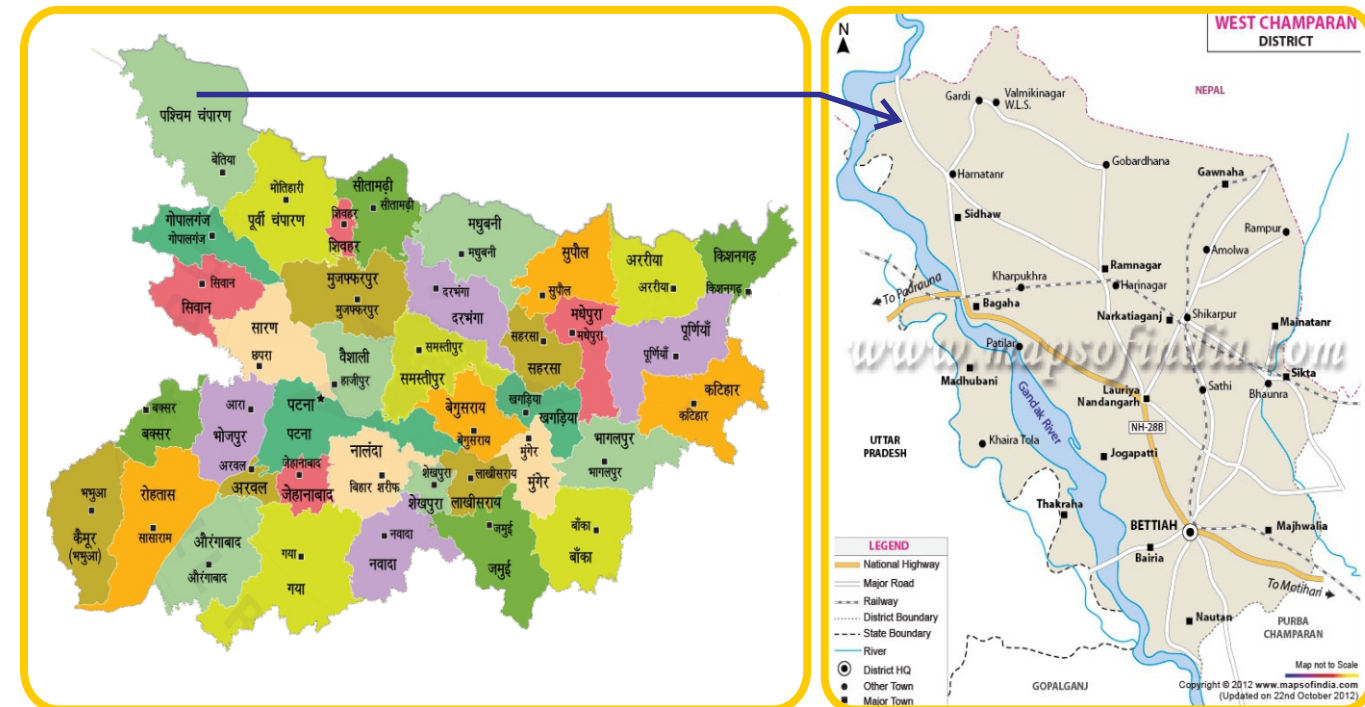


	Block	Area (Acre)	Block	Area (Acre)
Seed Production	Block C (Yellow Color)	12.48	Area under Roads and River	2.45
	Block B (Green Color)	21.44		Total Area Under KVK
Administrative Area	Block A (Orange Color)	10.63		

## परिचय

कृषि विज्ञान केन्द्र, नरकटियागंज की स्थापना 05/03/2019 को डॉ० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीन हुई। कृषि विज्ञान केन्द्र, नरकटियागंज के अंतर्गत कुल 10 प्रखण्ड यथा 1. नरकटियागंज 2. मैनाटाँड़, 3. गौनाहा, 4. लौरिया, 5. बगहा-1, 6. बगहा-2, 7. रामनगर, 8. पिपरासी, 9. मधुबनी एवं 10. भितहॉ हैं।

केन्द्र के समस्त तकनीकी हस्तान्तरण कार्यक्रम **"करके सीखो"** एवं **"देखकर विश्वास करो"** के सिद्धांत पर संचालित किया जाता है तथा प्रौद्योगिकी में निहित वास्तविक दक्षता को सिखाने पर बल दिया जाता है। यह केंद्र एक ऐसी महत्वाकांक्षी, वैज्ञानिक संस्था है जहाँ किसानों एवं कृषि कार्य में संलग्न महिलाओं तथा ग्रामीण युवकों/युवतियों को व्यवसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे स्वावलम्बी बनने के साथ तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर सकें। प्रशिक्षण मुख्यतः फसलोत्पादन, पौध सुरक्षा, पशु पालन, कृषि अभियान्त्रिकी, उद्यानिकी तथा अनेक कृषि सम्बन्धी विषयों में दिया जाता है। केंद्र के द्वारा किसानों के खेतों पर किसानों को शामिल करते हुए वैज्ञानिकों की देख-रेख में उन्नत तकनीकी का परीक्षण किया जाता है तथा कृषकों एवं विस्तार कार्यकर्ताओं के समक्ष आधुनिकतम वैज्ञानिक तकनीक का अग्रिम-पंक्ति प्रदर्शन किया जाता है। कृषि विज्ञान केन्द्र वैज्ञानिकों, विषय वस्तु विशेषज्ञों, विस्तार कार्यकर्ताओं तथा कृषकों की संयुक्त सहभागिता से कार्य करता है। केन्द्र पर प्रशासनिक भवन में प्रशिक्षण कक्ष, व केन्द्र पर मुर्गी पालन, केचुआ पालन, अजोला इकाई, सोलर सिंचाई प्रणाली, समेकित कृषि प्रणाली (मत्स्य पालन, औद्यानिकी फसलें, धान्य फसलें आदि), औद्यानिक फसलों की मातृ वृक्ष वाटिका, केन्द्र के प्रक्षेत्र पर सिंचाई (जमीन के अन्दर पाईप द्वारा), व स्प्रिंकलर व ड्रिप सिंचाई पद्धति का कार्य कराया गया है। इसके अतिरिक्त किसानों के समग्र विकास हेतु मृदा जाँच मिटटी जांच प्रयोगशाला, मौन पालन, मशरूम उत्पादन, संरक्षित खेती हेतु पाली हॉउस, नेट हॉउस आदि की स्थापना प्रस्तावित है। केन्द्र के द्वारा वर्ष 2019-20 से ही धान, गेहूँ तथा सरसों के उच्च गुणवत्तायुक्त बीज का उत्पादन एवं उच्च गुणवत्तायुक्त सब्जियों की पौध तैयार कर किसानों तक पहुँचाने का कार्य कराया जा रहा है। केंद्र के प्रक्षेत्र पर तकनीकी पार्क (फसल संग्रहालय) के रूप में वर्ष 2020-21 से (रबी एवं खरीफ मौसमी फसलों का) अनवरत कार्य कराया जा रहा है, जिससे किसानों का केंद्र पर भ्रमण के दौरान "देखकर विश्वास करो" के सिद्धांत द्वारा जानकारी उपलब्ध करायी जा रही है।

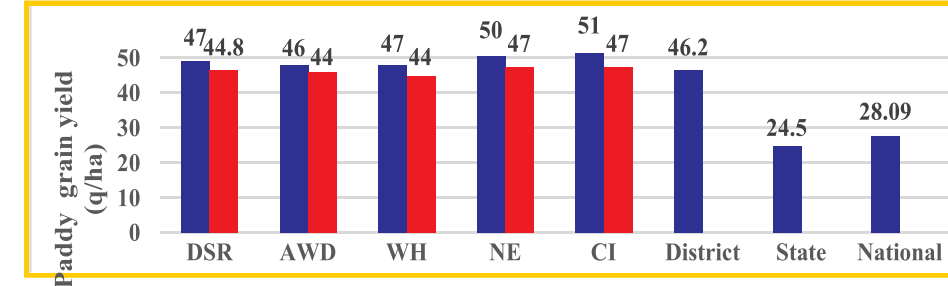


### कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिदेश

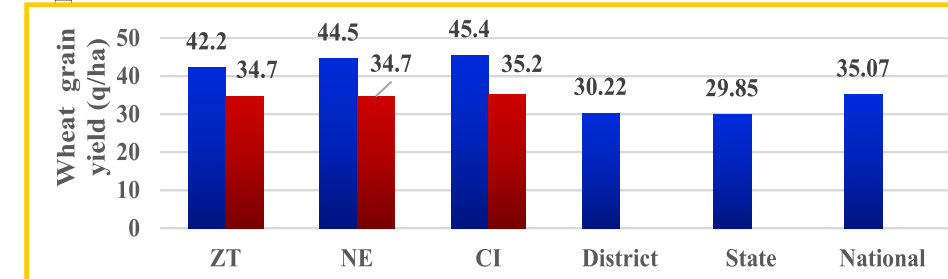
तकनीकियों / उत्पादों का मूल्यांकन एवं उसका प्रदर्शन करना कृषि विज्ञान केन्द्र का मुख्य अधिदेश (मेन्डेट) है।

## जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम

जलवायु के अनुकूल कृषि कार्यक्रम के अंतर्गत किसानों को मौसम के अनुकूल वैज्ञानिक तरीके से खेती करना सिखाया जाता है, जिससे कृषि उत्पादकता बढ़ेगी और किसानों की आय में बढ़ोत्तरी पाई गयी है। वर्ष 2020 के रबी मौसम से जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम केंद्र के द्वारा प्रखण्ड नौतन के दो गावों (बैकुंठवा व पकड़िया) में संचालित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत शून्य जुताई से गेहूँ की बोआई, न्यूट्रेंट एक्सपर्ट/ग्रीन सीकर के द्वारा गेहूँ में समेकित पोषक तत्व प्रबंधन, सामुहिक सिंचाई प्रणाली से गेहूँ की खेती, मक्का की सीधी बुआई, मक्का के साथ अंतर फसल, शून्य जुताई एवं सीधी बुआई से मसूर की बोआई, सरसों की सीधी बुआई, आलू की अंतर फसल, आलू की खेती, धान की सीधी बुआई, समूहबद्ध सिंचाई पद्धति में धान की खेती, सूखा/गीला सिंचाई पद्धति से धान की खेती, जल संरक्षण एवं मेढ़ निर्माण के द्वारा धान की खेती, न्यूट्रेंट एक्सपर्ट/ग्रीन सीकर के द्वारा धान में समेकित पोषक तत्व प्रबंधन कार्यक्रम चलाया जा रहा है।



DSR: Direct seeded rice  
AWD: Alternate wetting/ drying  
WH: Water harvesting and field bunding  
NE: Nutrient expert/ green seeker/LCC based nutrient management  
CI: Community irrigation



ZT: Zero tillage  
NE: Nutrient expert/ green seeker/LCC based nutrient management  
CI: Community irrigation

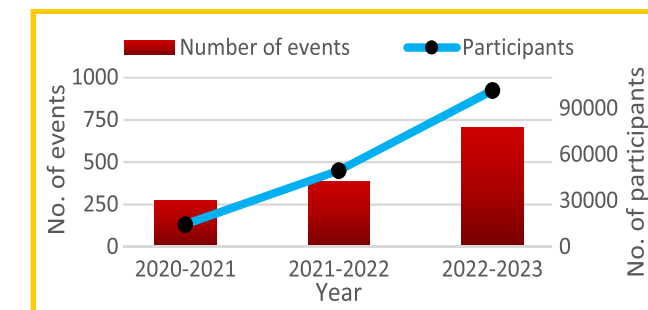


### स्वच्छता ही सेवा

भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी के द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत मिशन का आरंभ किया गया था। इस कार्यक्रम के अंतर्गत केंद्र द्वारा क्षेत्र के कृषकों एवं स्कूल के छात्रों के बीच स्वच्छता ही सेवा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

### प्रसार गतिविधियाँ

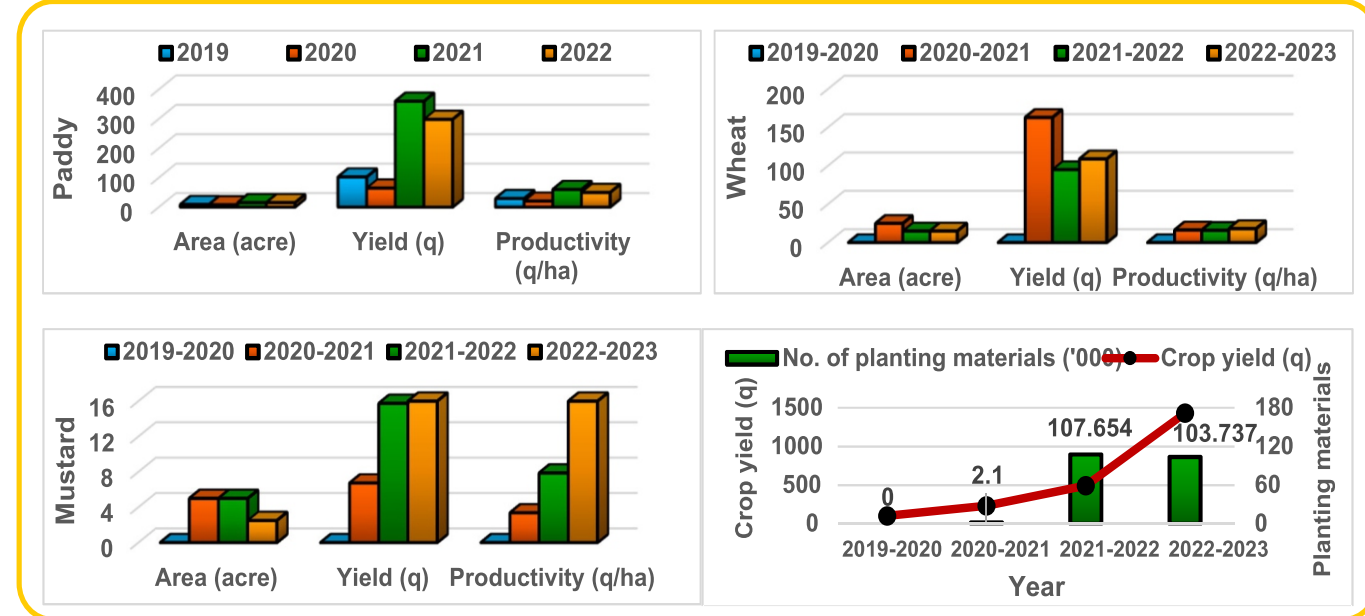
केन्द्र द्वारा संचालित विभिन्न प्रसार गतिविधियों के माध्यम से किसानों तक नवीनतम कृषि तकनीकियों को पहुँचाया जा रहा है।



### केन्द्र के प्रक्षेत्र पर उन्नतशील बीज व सब्जी पौध उत्पादन एवं वितरण

जिले के किसानों के लिए उन्नतशील प्रभेद के बीज, अनाज, दलहन, तिलहन के अतिरिक्त सब्जी की खेती को बढ़ावा देने के लिए सामयिक नर्सरी पौध की व्यवस्था किसानों को उपलब्ध कराया जाता है। इसमें डॉ राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, आई.सी.ए.आर. के अन्य शोध संस्थानों तथा प्रदेश व देश में अवस्थित संस्थानों द्वारा कृषि की नवीन प्रभेदों को उपलब्ध कराना शामिल है।

केन्द्र की सहलग्नता

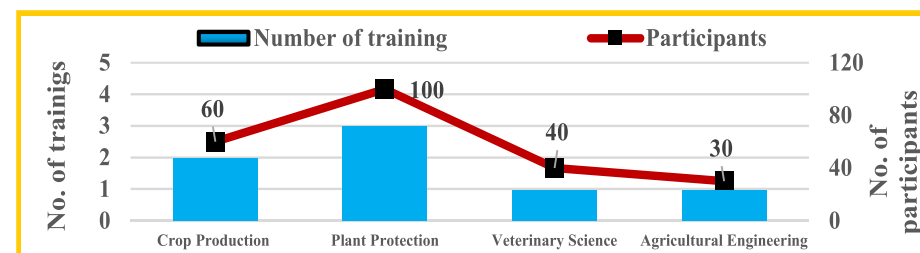


- आत्मा— इसके द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों में सहयोग करता है, इसके लिए जिले के आकस्मिक योजनाओं को बनाने में केंद्र के वैज्ञानिकों ने सहयोग दिया है।
- नेशनल फूड सेक्योरिटी मिशन— कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों की सहायता से इस मिशन में प्रशिक्षण में सहयोग व आयोजित बैठकों में केंद्र सम्मिलित होता है।
- नेशनल हार्टिकल्चर मिशन—जिले के उद्यान विभाग द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों में केंद्र की प्रतिभागिता होती रहती है।
- नाबार्ड—जिले में नाबार्ड द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न किसान उत्पादक संघ के कार्यक्रमों, समूहों के कार्यक्रमों में प्रतिभागियों को केंद्र द्वारा प्रशिक्षण व सलाहकारी सेवाएँ प्रदान की जाती हैं।
- पशु पालन विभाग— जिले के पशु पालकों के लिए विभाग द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न योजनाओं में आवेदन में सहयोग के साथ ही विभाग द्वारा आयोजित पशु स्वास्थ्य शिविरों में सहयोग तथा सलाहकारी सेवाएँ प्रदान की जाती हैं।

### प्रायोजित परियोजनाएं

#### अनुसूचित जाति उपयोजना

इस योजना के अन्तर्गत अनुसूचित जाति के कृषकों के लिए पोषण सुरक्षा, जीवनयापन स्तर में सुधार तथा आय संबर्धन के लिए प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं विभिन्न प्रकार के उत्पादक सामग्री वितरण द्वारा लाभ पहुँचाया जा रहा है।



### कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियाँ

- विभिन्न कृषि प्रणालियों के अन्तर्गत किसानों के खेत पर परीक्षण (ऑन फार्म टेस्टिंग) द्वारा स्थान विशेष कृषि तकनीकों की पहचान करना।
- कृषक प्रक्षेत्रों पर तकनीकों की उत्पादन क्षमता के स्थापना / प्रदर्शन हेतु अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन आयोजित करना।
- किसानों हेतु आधुनिक कृषि तकनीकों के विषय में ज्ञानार्जन एवं कौशल संवर्द्धन हेतु प्रशिक्षण आयोजित करना।
- प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए उनके अग्रिम क्षेत्र विशेष में तकनीकी विकास के ज्ञान संवर्द्धन हेतु प्रशिक्षण आयोजित करना।
- जिला के कृषि अर्थव्यवस्था के समुन्नयन हेतु सार्वजनिक, निजी तथा स्वयंसेवी क्षेत्रों के लिए संसाधन एवं ज्ञान केन्द्र रूप में कार्य करना।
- उन्नतशील बीज, पौध तथा जैविक उत्पादों का उत्पादन कर कृषकों को उपलब्ध कराना।
- किसानों को विभिन्न विषयों पर सूचना एवं संचार तकनीक (आई.सी.टी.) और अन्य मीडिया माध्यमों का उपयोग करके कृषि परामर्श प्रदान करना।

### केन्द्र पर उपलब्ध संरचनाएं

#### प्रक्षेत्र की स्थिति एवं आवश्यकतायें

नरकटियागंज प्रक्षेत्र की मिट्टी बलुई-दोमट है। पी.एच.—7.88, ई.सी.— 0.248 डी.एस./एम., आर्गेनिक कार्बन 0.45 प्रतिशत, नाइट्रोजन उपलब्ध 214 के.जी./हेक्टेयर, फॉस्फोरस उपलब्ध 19.99 के.जी./हेक्टेयर, पोटेशियम उपलब्धता 191 के.जी./हे० है।

#### कृषि विज्ञान केन्द्र के अधीन उपलब्ध जमीन

क्र.सं.	इकाई	(हे०)
1	भवन आदि	1.25
2	बागवानी	1.0
3	फसल	13.25
4	कृषि वानिकी	0.50
5	प्रदर्शन इकाई	1.0
6	तालाब	0.2
7	अन्य (मेड़, सड़क, चैनल)	1.5
	कुल	18.7

#### आधारभूत संरचना

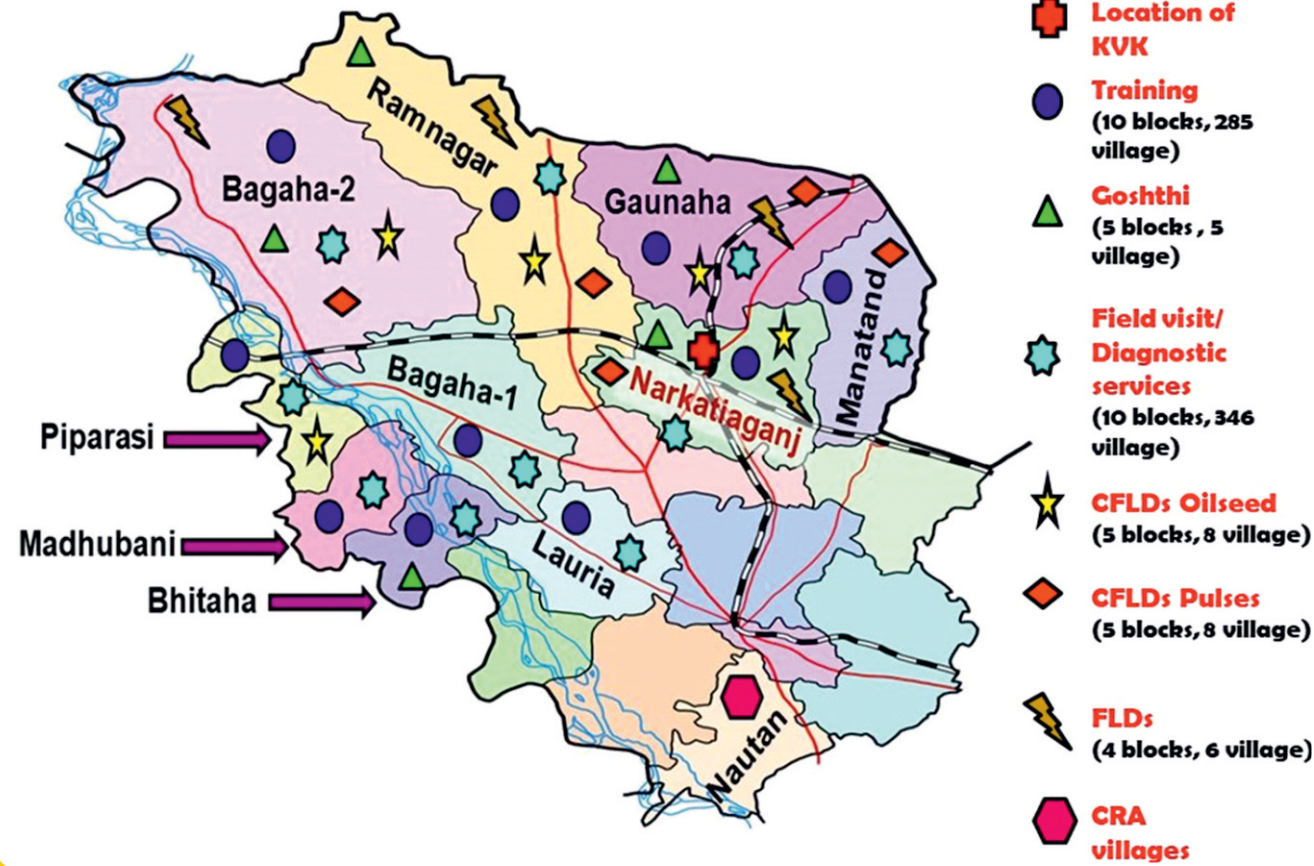
(I)	प्रशासनिक भवन	(vi)	श्रेसिंग फ्लोर
(ii)	किसान घर	(vii)	सहायक सड़क
(iii)	यांत्रिकी गोदाम	(viii)	बोरिंग
(iv)	गोदाम	(ix)	मुर्गी घर
(v)	सिंचाई प्रणाली (जमीन के अन्दर पाईप द्वारा)	(x)	सोलर सिंचाई प्रणाली (सोलर ट्री)

#### केन्द्र पर विकसित प्रदर्शन इकाईयाँ

क्र.सं.	प्रदर्शनइकाई	सह-इकाईयाँ	क्र.सं.	प्रदर्शनइकाई	सह-इकाईयाँ
1	वर्मी कम्पोस्ट इकाई	वर्मी वाश इकाई	3.	पौधशाला	
2	समेकित कृषि प्रणाली	तालाब के किनारे फलदार वृक्ष	4.	अजोला इकाई	
		अजोला इकाई	5.	फसल संग्रहालय	
		मुर्गी पालन प्रदर्शन इकाई			

## विभिन्न प्रखण्डों में कृषि विज्ञान केन्द्र नरकटियागंज की पहुँच

### Outreach of the KVK, Narkatiaganj, West Champaran



### प्रशिक्षण कार्यक्रम

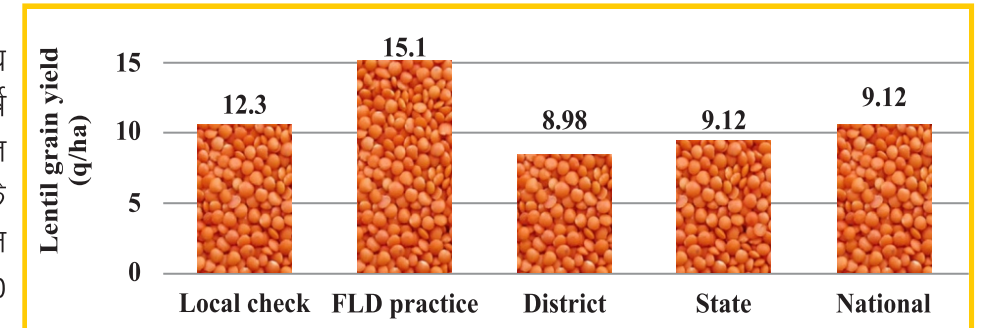
कृषि विज्ञान केन्द्र नरकटियागंज द्वारा नवीनतम कृषि जानकारी हेतु कृषकों, प्रसार कर्मियों तथा नवयुवकों के रोजगार सृजन के लिए वर्ष 2019-20 से 2022-23 तक विभिन्न विषयों पर 160 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिससे 6775 लाभार्थी लाभान्वित हुए। कृषकों में आय तथा रोजगार सृजन हेतु मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, गन्ने में प्रमाणित बीज उत्पादन, व्यवसायिक बकरी पालन, पशुपालन आधारित समेकित कृषि प्रणाली, ग्रामीण परिवेश में कुक्कट पालन, बाजरा की उन्नत उत्पादन तकनीक, ढींगरी मशरूम उत्पादन तकनीक, कृषि में उपयोग होने वाले विभिन्न यंत्रों का महत्व, सौर ऊर्जा संचालित सिंचाई प्रणाली स्थापना एवं रख-रखाव तथा सौर ऊर्जा संचालित सिंचाई प्रणाली विषय पर प्रशिक्षण कराया गया जिससे 405 कृषक लाभान्वित हुए। केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा जिले के प्रसार कर्मियों को प्रशिक्षित कर ज्ञान संबर्धन कराया गया जिससे 161 प्रसार कर्मी लाभान्वित हुए।



हरसरी, नरकटिया, मुरली, कटघरवा एवं लौहार पीटिया कराया (2022-23) गया। प्रदर्शन उपरान्त प्रभेद राजेंद्र सुफलाम का अधिकतम उत्पादन 16.8 कुन्तल तथा न्यूनतम 9.8 कुन्तल प्रति हेक्टेयर प्राप्त हुआ जबकि 103 किसानों का औसत उपज 12.20 कुन्तल प्रति हेक्टेयर पाया गया। जोकि कृषक पद्धति से 45.12 प्रतिशत अधिक है तथा लागत-लाभ अनुपात 2.54 हुआ। वर्ष 2022-23 में सरसों की उच्च उत्पाद प्रजाति डी. आर.एम.आर.आई.जे. 31 के साथ संतुलित उर्वरकों के प्रयोग, बीज शोधन एवं माहूँ कीट के प्रबंधन का प्रदर्शन कराने पर कृषक पद्धति की अपेक्षा 54.8 प्रतिशत अधिक उपज प्राप्त हुआ तथा लागत लाभ अनुपात प्रदर्शन कराने पर 2.56 प्राप्त किया गया।



**दलहन (मसूर) —** राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजनान्तर्गत वर्ष 2022-23 में मसूर फसल की उन्नत प्रभेद आई. पी. एल. 316 के साथ-साथ समेकित फसल प्रबंधन का प्रदर्शन (20 हे० क्षेत्रफल में) 50 किसानों के यहाँ कटसिकरी, मंगरेहरी, रमौली, माधोपुर, मटिहानी, मरजदी, मझहुआ, मिसरौली, दिउलिया, मझहौरा, नरकटिया, कटघरवा, मुसरहवा, भथुआ, भावल, हरसरी, बैरिया, नरकटियागंज, समहौता, कदमहिया गाँव में कराया गया। मसूर की उच्च उत्पाद प्रजाति आई.पी.एल. 316 के साथ संतुलित उर्वरकों के प्रयोग, बीज शोधन एवं माहूँ कीट के प्रबंधन का प्रदर्शन कराने पर कृषक पद्धति की अपेक्षा 22.7 प्रतिशत अधिक उपज प्राप्त हुआ तथा लागत लाभ अनुपात प्रदर्शन कराने पर 2.64 प्राप्त किया गया।



**दलहन (चना) —** राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजनान्तर्गत वर्ष 2022-23 में चना फसल की उन्नत प्रभेद आर.वी.जी.-202 के साथ-साथ समेकित फसल प्रबंधन का प्रदर्शन (20 हे० क्षेत्रफल में) 50 किसानों के यहाँ कटसिकरी, रमौली, भसुरारी, बिसुनपुरवा, माधोपुर, मंगरेहरी, मटियानी, मझहुआ, मिसरौली, भरसी, डिउलिया, तरहरवा, नरकटिया, कटघरवा, भावल, मुरली, समहौता, नरकटियागंज, कदमहिया गाँव में कराया गया। चना की उच्च उत्पाद प्रजाति आर. बी. जी. 202 के साथ संतुलित उर्वरकों के प्रयोग, बीज शोधन एवं माहूँ कीट के प्रबंधन का प्रदर्शन कराने पर कृषक पद्धति की अपेक्षा 35.8 प्रतिशत अधिक उपज प्राप्त हुआ तथा लागत लाभ अनुपात प्रदर्शन कराने पर 2.51 प्राप्त किया गया।



### प्रक्षेत्र दिवस

सरसों फसल की उन्नत प्रभेद राजेंद्र सुफलाम तथा गिरिराज (DRMR-IJ-31) नेशनल मिशन आन आयल सीड एंड आयल पाम के योजनान्तर्गत 80 हे० क्षेत्रफल में कुल 203 किसानों के यहाँ प्रदर्शन कार्यक्रम वर्ष 2021-22 व 2022-23 के दौरान 28 गाँवों में कराया गया कराया गया। प्रखण्ड बगहा के गुरवलिया ग्राम में दिनांक 23.02.2022 को, रामनगर प्रखण्ड के कटसिकरी गाँव में दिनांक 24.2.2022 तथा नरकटियागंज प्रखण्ड के बड़िनहार ग्राम में दिनांक 23.3.2022 को प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया जिसमें क्रमशः 35, 56 व 25 किसानों ने प्रतिभाग किया।



## गेहूँ (डी. बी. डब्लू-187) की कटाई लागत एवं श्रम को कम करने तथा अधिक उत्पाद प्राप्त करने के लिए सही व्हीट हारवेस्ट तकनीकी का परीक्षण

गेहूँ की कटाई में श्रम एवं लागत अधिक होने के कारण कृषक भाइयों को लाभ कम प्राप्त होता है। इस समस्या के निवारण हेतु तकनीकी का मूल्यांकन 7 किसानों के यहाँ समहौता, बरनिहार, दुरग्वलिया और दिउलिया गाँव में किया गया। कृषक पद्धति: मनुअल कटिंग और थ्रेसर के उपयोग के द्वारा थ्रेसिंग, टी.ओ.-1: रीपर कम बाइंडर द्वारा गेहूँ की कटिंग और थ्रेसर के उपयोग द्वारा थ्रेसिंग, टी.ओ.-2: कम्बाइन हारवेस्टर द्वारा कम्प्लीट हारवेस्टिंग-गेहूँ कटाई में उपयुक्त अलग-अलग प्रौद्योगिकी में कम्प्लीट हारवेस्टिंग-कम्बाइन हारवेस्टर (टी.ओ.-2) में अधिकतम पैदावार 47 किं/हे० रही। जबकि टी.ओ.-1 एवं किसान पद्धति में क्रमशः 46.5 किं/हे० एवं 46.2 किं/हे० रहा। (टी.ओ.-2) में सबसे अधिक लाभ: लागत 2.71 अन्य पद्धतियों के मुकाबले रहा। (टी.ओ.-2) में टी.ओ.-1 एवं किसान पद्धति के मुकाबले क्रमशः रुपये 1688/- एवं रुपये 3063/- प्रति हेक्टेयर अधिक मुनाफा रहा।



## डेयरी गायों में दूध उत्पादन पर अजोला फीडिंग का आकलन

डेयरी क्षेत्र में मुख्य लागत पशुओं के आहार प्रबंधन में जाता है। पश्चिम चम्पारण जिले में प्रोटीन युक्त पशु आहार की काफी कमी पाई जाती है इस समस्या के निवारण हेतु डेयरी गायों में दूध उत्पादन पर अजोला फीडिंग का आकलन 10 किसानों के यहाँ दमरापुर, तरहरवा, एव दिउलिया गाँव में किया गया। कृषक पद्धति: पुआल, चोकर, दाना मिश्रण आवश्यकतानुसार, टी.ओ.-1: अजोला खिलाना (1.5 कि०ग्रा० प्रति पशु) + 80: दाना मिश्रण के संग पुआल, चोकर आवश्यकतानुसार, टी.ओ.-2: अजोला खिलाना (2 कि०ग्रा० प्रति पशु) + 75: दाना मिश्रण के संग पुआल, चोकर आवश्यकतानुसार, टी.ओ.-2 में अधिकतम 17.5 प्रतिशत दुग्ध उत्पादन कृषक पद्धति की तुलना में प्राप्त हुआ है जबकि टी.ओ.-1 में 15 प्रतिशत अधिक प्राप्त हुआ है। टी.ओ.-2 एवं टी.ओ.-1 दोनों में फैंट प्रतिशत में 3.7 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गयी। लाभ:लागत: सर्वाधिक 1.85 टी.ओ.-2 में प्राप्त हुआ।



## दुधारू पशुओं में क्षेत्र विशिष्ट खनीज मिश्रण का मूल्यांकन

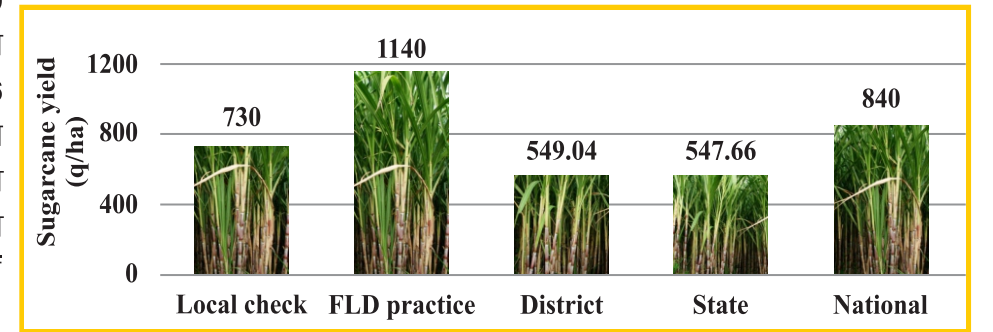
पश्चिम चम्पारण जिले में क्षेत्र के अनुकूल खनीज मिश्रण की अनुपलब्धता है, जिस कारण से दुधारू पशुओं में उत्पादकता में कमी पायी जाती है। इस समस्या के निवारण हेतु दुधारू पशुओं में क्षेत्र विशिष्ट खनीज मिश्रण का मूल्यांकन 10 किसानों के यहाँ दमरापुर, तरहरवा, एव दिउलिया गाँव में किया गया। कृषक पद्धति: पुआल, चोकर, दाना मिश्रण एवं नमक आवश्यकतानुसार टी.ओ.-1: क्षेत्र विशिष्ट खनीज मिश्रण (ICAR-RCER Patna) 50 ग्रा० प्रतिदिन, प्रति गाय + पुआल, चोकर, दाना मिश्रण एवं नमक आवश्यकतानुसार टी.ओ.-2: व्यवसायिक खनीज मिश्रण 50 ग्रा० प्रतिदिन, प्रति गाय + पुआल, चोकर, दाना मिश्रण एवं नमक आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया। टी.ओ.-1 में अधिकतम 12 प्रतिशत दूध उत्पादन की बढ़ोतरी कृषक पद्धति की तुलना में दर्ज की गयी जबकि टी.ओ.-1 की तुलना में 4 प्रतिशत अधिक है। दूध फैंट प्रतिशत में टी.ओ.-1 में कृषक पद्धति की तुलना में 3.5 प्रतिशत अधिक प्राप्त हुआ। जबकि टी.ओ.-1 में फैंट प्रतिशत में कृषक पद्धति की तुलना में तीन प्रतिशत अधिक प्राप्त हुआ। लाभ:लागत: सर्वाधिक 1.63 टी.ओ.-1 में प्राप्त हुआ।



## किसानों के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन कार्यक्रम

### प्रभेद राजेंद्र गन्ना-1 के पौध प्रत्यारोपण विधि का प्रदर्शन कार्यक्रम

पश्चिम चम्पारण जिले में गन्ने की खेती 172300 हेक्टेयर में की जाती है जिसमें किसान भाइयों का लागत एवं बीज अधिक लगता है। इस समस्या को दूर करने के लिए कृषकों के प्रक्षेत्र पर गन्ने की नवीनतम तकनीक "गन्ना पौध प्रत्यारोपण विधि" का प्रदर्शन गन्ने की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए 10 किसानों के यहाँ 0.25 हेक्टेयर क्षेत्र में हरदी, समहौता, कटसीकरी एवं सिगरीमुल्ला गाँव में किया गया। गन्ने की लम्बाई 428 सेमी., कल्लों की संख्या 8/प्रति पौध, गन्ने की चौड़ाई 40 मिमी., वजन 1.7 किग्रा. तथा उपज 1140 कुन्तल/हे० दर्ज किया गया। उपज में वृद्धि कृषक पद्धति की अपेक्षा 56 प्रतिशत अधिक पाई गई, शुद्ध आय रूपया 261900/-हे० तथा लागत-लाभ अनुपात 3.18 दर्ज किया गया जबकि कृषक पद्धति में लागत-लाभ अनुपात 1.68 प्राप्त हुआ।



### धान (राजेंद्र मंसूरी-1) में जिंक के पर्णीय छिड़काव विधि का प्रदर्शन

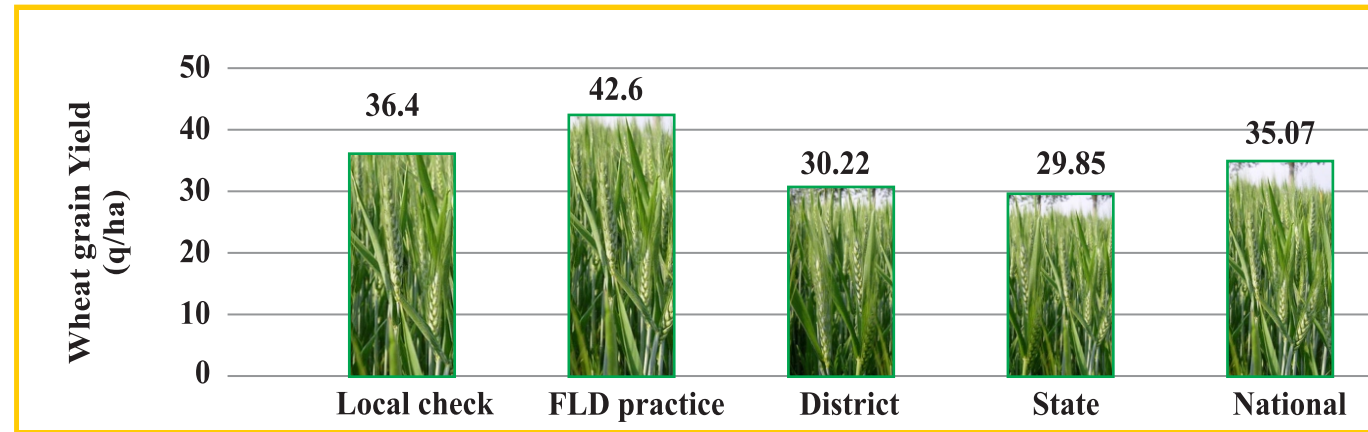
पश्चिम चम्पारण जिले में धान की खेती 138260 हेक्टेयर में की जाती है तथा यहाँ की मिटटी में जिंक की कमी के कारण धान की फसल में लक्षण प्रकट होते हैं जिससे उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस समस्या को दूर करने के लिए कृषकों के प्रक्षेत्र पर धान की फसल की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए 20 किसानों के यहाँ 2 हेक्टेयर क्षेत्र में धर्मपुर, बढनिहार एवं तरहरवा गाँव में प्रदर्शन लगाया गया। धान में कल्ले, बाली एवं फूल निकलते समय पर्णीय छिड़काव विधि द्वारा जिंक का प्रयोग (दर 0.5%) से धान की अधिकतम उपज 51.6 किं०टल/हे० प्राप्त हुआ जबकि औसतन उपज 44.2 किं०/हे० प्राप्त हुई जो कि कृषक पद्धति से 12.10 प्रतिशत अधिक है। जिंक का प्रयोग करने पर लाभ-लागत अनुपात 2.49 प्राप्त हुआ।



### गेहूँ की बाँयोफोर्टीफाईड प्रभेद डी.वी.डब्लू.-187 का प्रदर्शन

पश्चिम चम्पारण जिले में गेहूँ की खेती 70130 हेक्टेयर में की जाती है लेकिन किसानों को बाँयोफोर्टीफाईड गेहूँ के प्रभेदों के बारे में जानकारी का अभाव है। बाँयोफोर्टीफाईड गेहूँ पोषण व्यवस्था में समाहित करने से स्वास्थ्य को दुरुस्त करने में अहम भूमिका अदा करता है। कृषकों के प्रक्षेत्र पर बाँयोफोर्टीफाईड गेहूँ की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए 10 किसानों के यहाँ 2 हेक्टेयर क्षेत्र में नरकटियागंज, तरहरवा, समहौता गाँव में प्रदर्शन लगाया गया। गेहूँ की अधिकतम उपज 49.2 किं०टल/हे० प्राप्त हुआ जबकि औसतन उपज 42.6 किं०/हे० प्राप्त हुई जोकि कृषक पद्धति से 17.0 प्रतिशत अधिक है तथा लागत-लाभ अनुपात 2.34 हुआ।





### बकरियों में पी.पी.आर रोग से बचाव हेतु टीकाकरण एवं कृमिनाशक फैनबेण्डाजोल के प्रयोग का प्रदर्शन

पश्चिम चम्पारण जिले में छोटे किसानों का बकरी पालन एक प्रमुख व्यवसाय है। बकरियों में पी.पी.आर. विषाणुजनित रोग एक प्रमुख समस्या है जिसके कारण बकरियों की मृत्युदर अधिक होती है और किसान भाइयों का नुकसान अधिक होता है। इस समस्या को दूर करने के लिए 30 किसानों के यहाँ 100 बकरियों में टीकाकरण एवं कृमिनाशक फैनबेण्डाजोल के प्रयोग का प्रदर्शन कटसिकरी, रामनगर गाँव में कराया गया। टीकाकरण एवं कृमिनाशक के उपयोग के उपरांत 97 बकरियाँ स्वस्थ (मृत्यु दर 3 प्रतिशत) रही जबकि टीकाकरण एवं कृमिनाशक के उपयोग के बिना 63 बकरियाँ स्वस्थ (मृत्यु दर 27 प्रतिशत) रही। लाभ: लागत अनुपात = 2.41 प्राप्त हुआ।



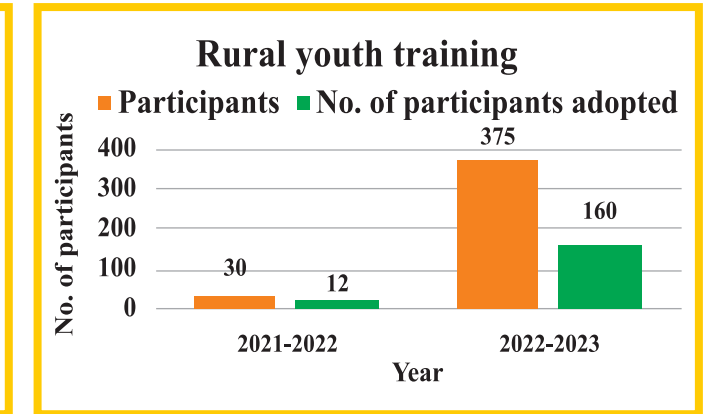
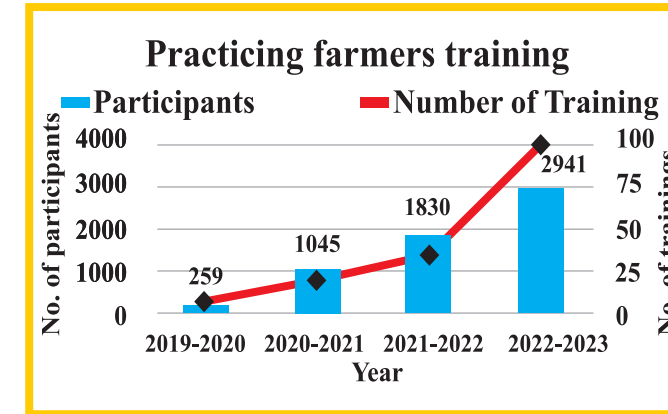
### धान के प्रभेद स्वर्णा 3335 का मैनुअल धान-गेहूँ मशीन द्वारा प्रदर्शन

आजकल जलवायु में परिवर्तन अधिक देखने को मिल रहा है जिसके कारण फसलों के उत्पादन में काफी कमी देखने को मिल रही है। इस समस्या से निपटने के लिए धान के बीजों की बुआई मैनुअल धान-गेहूँ मशीन द्वारा 10 किसानों के प्रक्षेत्र पर 2 हेक्टेयर क्षेत्र में प्रदर्शन लगाया गया। धान की अधिकतम उपज 52.20 क्विंटल/हे० प्राप्त हुआ जबकि औसतन उपज 50.20 क्विंटल/हे० प्राप्त हुआ जो कि कृषक पद्धति से 2.44 प्रतिशत अधिक है तथा लागत-लाभ अनुपात 2.14 हुआ।



### समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

**तिलहन-** नेशनल मिशन आन आयल सीड एंड आयल पाम के योजनान्तर्गत वर्ष 2021-22 एवं 2022-23 में सरसों फसल की उन्नत प्रभेद राजेन्द्र सुफलाम तथा गिरिराज (क्वड्रै.31) के साथ-साथ समेकित फसल प्रबंधन सहित क्रमशः 103 (40 हे० क्षेत्रफल में) व 100 (40 हे० क्षेत्रफल में) प्रदर्शन (कुल 203 किसानों के यहाँ) हरदी, सम्हौता, कटसिकरी एवं सिगरिमुल्ला (2021-22) तथा कटसिकरी, भावल, बेलोरा, हरपुर, हरदी, दोनमट, नराईपुर, गुरवलिया, बरवा सहनी, सेमरा, परोरहा, लक्ष्मीपुर, बांसगाँव, बबुईटोला, बगहा, बडनिहार, रमौली, दिउलिया, तरहरवा, मलदी,



## किसानों के प्रक्षेत्र पर परीक्षण कार्यक्रम

कृषि के क्षेत्र में हो रहे नित नए अनुसंधानों/प्रौद्योगिकियों का मूल्यांकन किसानों के आवश्यकताओं के अनुरूप, क्षेत्र विशेष में किसानों के प्रक्षेत्र पर करना आन फार्म ट्रायल का प्रमुख उद्देश्य है। नवीन तकनीकियों का अवलोकनध्यान्यकरण उपरान्त बृहद स्तर पर कृषकों के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन कराकर तकनीकियों का प्रचार-प्रसार किया जाता है, जिससे किसानों की आय बढ़ सके तथा पोषण व्यवस्था में सुधार के साथ-साथ जीवनयापन ऊपर उठ सके। किसानों के प्रक्षेत्र पर निम्नलिखित परीक्षण कार्यक्रम कराया गया है :-



### बैंगन में फल एवं प्ररोह बेधक कीट के प्रबंधन का समेकित विधि द्वारा मूल्यांकन

बैंगन की फसल में फल एवं प्ररोह बेधक कीट के द्वारा उपज में सामान्यतरु 35-40 प्रतिशत कमी देखने को मिलती है। पश्चिम चम्पारण जिले में बैंगन की फसल में फल एवं प्ररोह बेधक कीट एक गम्भीर समस्या है। इस कीट प्रबंधन के मूल्यांकन हेतु किसानों के प्रक्षेत्र पर समेकित कीट प्रबंधन प्रणाली जैसे-कृषक पद्धति: रासायनिक दवाओं का असंतुलित प्रयोग, फेरोमोन ट्रेप का प्रयोग (80 ट्रेप प्रति हे०) तथा साप्ताहिक-प्रभावित फल एवं प्ररोह बेधक भागों को एकत्र कर नष्ट करना + लेमडासाईहेलोथ्रीन 5 प्रतिशत ई.सी. की 0.6 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव किया गया। परीक्षण उपरान्त उपज में बृद्धि कृषक पद्धति की अपेक्षा 61.67 प्रतिशत अधिक पाई गयी। औसत शुद्ध आय रुपये 207500/हे० पाया गया।



### गेहूँ (डी. बी. डब्लू-187) के फसल में नाइट्रोजन उपयोग क्षमता के सुधार पर मूल्यांकन

पश्चिम चम्पारण जिले में गेहूँ की खेती 70130 हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है। किसान भाई नत्रजन की संतुलित मात्रा का प्रयोग यूरिया के माध्यम से करते हैं जिसमें खर्च अधिक लगता है। गेहूँ खेती की लागत को कम करने के लिये नैनो यूरिया का प्रयोग कर गेहूँ उत्पादन के प्रभाव तथा लागत का मूल्यांकन 7 किसानों के यहाँ समहौता, तरहरवा, बरनिहार, धर्मपुर, कटसिकरी गाँव में किया गया गेहूँ का उपज कृषक पद्धति में सबसे अधिकतम 46.2 क्विंटल/हे० प्राप्त हुआ जो कि टी.ओ.-2 में प्राप्त गेहूँ का उपज 44.6 क्विंटल/हे० के साथ समतुल्य है। लाभ-लागत अनुपात कृषक पद्धति में 2.35 है और जो कि टी.ओ.-2 में प्राप्त लागत-लाभ अनुपात 2.31 के साथ समतुल्य है।

